5

यीशु हमारे जैसा क्यों बना

(2:5-18)

हमारे वचन पाठ इब्रानियों 2:5-18 में लेखक ने ज़ोर दिया कि यीशु शरीर बना अर्थात वह मनुष्य बना, यानी वह *हमारे जैसा* बना। 6 और 7 आयतों में लेखक ने इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि मनुष्यों को ''स्वर्गदूतों से कुछ कम'' बनाया गया था, भजन संहिता 8 से उद्धृत किया। फिर आयत 9 में उसने लिखा कि यीशु को ''स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया'' था। अन्य शब्दों में यीशु एक मनुष्य बना। यह विचार पूरे हवाले में प्रकाशमान किया गया।

- यीशु ने मनुष्यों को अपने ''भाई'' कहा (आयतें 11, 12)।
- यीशु ''मांस और लोहू'' बना (आयत 14)।
- यीशु ''*सब बातों में* अपने भाइयों के समान'' बना (आयत 17)।

इस तथ्य से एक समस्या खड़ी हो गई।[1] 1:4-14 में लेखक ने ज़ोर दिया कि यीशु स्वर्गदूतों से उत्तम (श्रेष्ठ) है। इस महत्वपूर्ण सच्चाई पर 2:5 में फिर से ज़ोर दिया गया। परन्तु यह भी सच है कि यीशु शरीर बना अर्थात वह मनुष्य बना, जिसका अर्थ यह है कि उसे ''स्वर्गदूतों से कुछ कम'' किया गया। यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ होने के साथ-साथ स्वर्गदूतों से कम कैसे हो सका?

इब्रानियों की पुस्तक ने यह साबित किया कि यीशु का मनुष्य बनना ''स्वर्गदूतों से कुछ कम'' इस तथ्य को नहीं नकार पाया कि वह स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है। उसने कम से कम तीन कारण बताए कि यीशु के लिए हमारे जैसा बनना क्यों आवश्यक था।

मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए (2:5-8)

परमेश्वर की यह मंशा थी कि मनुष्य जाति सब चीज़ों के ऊपर हो और उसे महिमा का मुकुट मिले (आयतें 6, 7, 8क, ख), परन्तु प्रथम मनुष्य संसार में पाप लाया। परिणाम यह हुआ कि सब चीज़ें मनुष्य जाति के अधीन नहीं थीं (आयत 9क)। NEB में इस प्रकार है, ''परन्तु वास्तव में अभी हम सब चीज़ों को मनुष्य के अधीन नहीं देखते।'' मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर का उद्देश्य यीशु के ''सब बातों में'' अस्थाई रूप में हमारे जैसा बनने तक पूरा नहीं हुआ (2:17)। ''पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, देखते हैं'' (आयत 9क)। यीशु ने अन्त में मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा किया और ''महिमा और आदर का मुकुट पहिना'' (आयत 9ख)।

यीशु के द्वारा, परमेश्वर ''बहुत से पुत्रों को महिमा में'' लाएगा (आयत 10)। यीशु के हमारे जैसा बनने के कारण अन्त में मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की योजना लागू हुई।

हमारे लिए मरने को (2:9-16)

मसीह के लिए मरना आवश्यक क्यों था। आयत 9 ''मृत्यु का दुख उठाने'' की बात करती है।[2] परन्तु आत्मिक जीव के रूप में वह मर नहीं सकता था। मांस और लहू बनकर ही उस पर मृत्यु आ सकती थी। हमारे जैसा बनकर वह ''परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चख'' सकता था (आयत 9)। उसे हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर लेने के लिए हमारे जैसा बनना आवश्यक था।

इसके अलावा यीशु के लिए मनुष्यजाति के ऊपर शैतान की पकड़ को नष्ट करने के लिए मरना और मुर्दों में से जी उठना आवश्यक था। फिर यीशु के मांस और लहू बनने के लिए यह आवश्यक था।

> इसलिए जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे (आयत 14)।

यीशु के पुनरुत्थान का हमारे वचन पाठ में विशेष रूप में उल्लेख नहीं है पर इसका संकेत है।[3] यीशु हमारे जैसा बनकर मुर्दों में से जी उठा, जिस कारण वह ''जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा'' सकता है (आयत 15)।

हमारे लिए विनती करने के लिए (2:17, 18)

इब्रानियों की पुस्तक के मुख्य विषय ''यीशु हमारा महा याजक है'' का परिचय यहां मिलता है।[4] यीशु को हमारा प्रतिनिधित्व करने, अर्थात हमारा महा याजक बनने के लिए हमारे जैसा बनना आवश्यक है।

> इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महा याजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे। क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है (आयतें 17, 18)।

सांसारिक महायाजक प्रायश्चित के दिन संसार का सबसे बड़ा बलिदान चढ़ाता था। ऐसा वह ''लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित'' करने अर्थात परमेश्वर के क्रोध को शान्त करने के लिए करता था। हमारे महायाजक के रूप में यीशु ने हमारे पापों के लिए अपने आपको भेंट किया। परन्तु उसने उससे बढ़कर किया है। हमारे महायाजक के रूप में वह ''उनकी [हमारी भी] भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।'' अध्याय 4 यह ज़ोर देकर कहता है कि हमारा महा याजक हमारी ओर से *विनती* करता है (आयतें 14–16)।

क्या यीशु का मनुष्य बनना उसके स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ होने को नकारता है? नहीं, हमारा वचन पाठ यही कहता है। यीशु के लिए परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मनुष्य बनना आवश्यक था। यह महान सच्चाई कि वह हमारे जैसा बना उसकी महिमा और शान को बढ़ा देती है।

टिप्पणियां

[1]आयत 6 का आरम्भ ''परन्तु'' के साथ होता है जो अन्तर का संकेत देती है। [2]दुख उठाने वाले मसीहा की अवधारणा यहूदी सोच के लिए रुकावट थी। लेखक ने ध्यान दिलाया है कि मसीहा के लिए दुख उठाना क्यों आवश्यक है। [3]पुनरुत्थान के विषय का उल्लेख इब्रानियों में सामान्य ढंग में कई बार हुआ है: इब्रानियों 6:2; 11:19, 35. [4]याजकाई के यीशु के काम का संकेत पहले दिया गया था (1:3), परन्तु इब्रानियों की पुस्तक में यहां पहली बार उसे हमारा महायाजक कहा गया है।